

राजा का अंडा नृत्य

लेखन व चित्र: लैरी विल्क्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक शर्मीला और निपट अकेला राजा अपने महल की झरोखे से अपने नगर के बाशिन्दों को आता-जाता देखता है। उसका सपना है कि काश उसके भी दोस्त हों। वह ऐसा क्या करे कि लोग उस पर भी ध्यान दें? उनके सालाना अंडा नृत्य के जश्न में उसे भी बुलाया जाए, यह कैसे संभव हो? क्योंकि समस्या यह थी कि राजा तो अपनी इच्छा किसीसे कहने तक से डरता-हिचकता था। नगरवासी तब भौंचक रह गए जब राजा ने मसला अपने हाथों ले लिया। पाठकों को राजा की उस योजना पर हंसी आएगी, जिसकी मदद से उसने अपनी समस्या का हल निकाला और नए दोस्त बना ही लिए।

लेखक व चित्रकार लैरी विल्क्स अपनी कहानी और चित्रों में गरमाहट और विनाद भर कथा को हास्यपूर्ण अंत तक पहुँचाते हैं और उसे सजीव बनाते हैं।



राजा का अंडा नृत्य



राजा का अंडा नृत्य

लेखन व चित्र: लैरी विल्क्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



जो, एलनर, जॉन स्टीन
तथा प्राग के लिए





एक समय एक राजा था जो बेहद शर्मीला था
वह अपने महल में निपट अकेला रहता था।
वह अपने झरोखों से झांक नगरवासियों को
आते-जाते देखा करता और यह सपने देखता कि
उसके भी दोस्त होते।
“काश ये लोग मुझे अपने बड़े अंडा नृत्य में बुलाएं,”
उसने खुद से कहा।

उसने घंटों यह सपना देखा कि
वह भी अंडा नृत्य में शिरकत करेगा,
वह अंडों के गिर्द और उनके बीच
उन्हें बिना तोड़े किस खूबी से नाचेगा।
सारंगीवादक सारंगी बजाएंगे और लोग
उसके नाम के जयकारे बोलेंगे।





पर यह सब होगा कैसे, उसने सोचा।

“मैं तो इतना शर्मीला हूँ कि लोगों से बुलावा मांग नहीं सकूँगा,
और महल में तो कोई कभी आता ही नहीं।

लोगों को पता कैसे चलेगा कि मेरा सपना क्या है?”

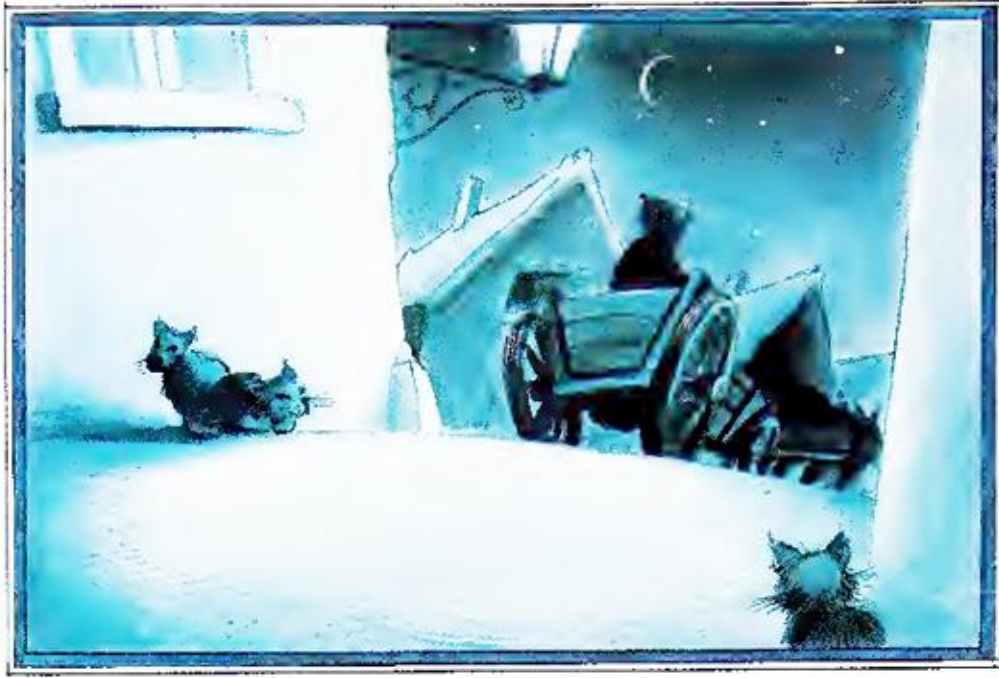
उदास शर्मीले राजा ने इस बारे में इतनी देर तक सोचा कि

उसका रात का खाना ठंडा हो गया,

और शाम का लाल आसमान

रात के अंधेरे में बदल गया।





अगली सुबह बेहद शान्त थी। ऑस्कर, जो नगर के छोर पर रहने वाला किसान था, पहला इन्सान था जिसने सोचा कि सब कुछ इतना शान्त क्यों है? मुर्गे ने बांग क्यों नहीं लगाई? उसने सुबह की धूप कमरे में आने देने के लिए खिड़की खोलते हुए सोचा। मुर्गियाँ दाना चुगती, माटी को टूंगती, कुड़कुड़ा क्यों नहीं रहीं? ऑस्कर ने फौरन कपड़े पहने और तहकीकात करने निकला। उसने जो पाया वह भयावह था!

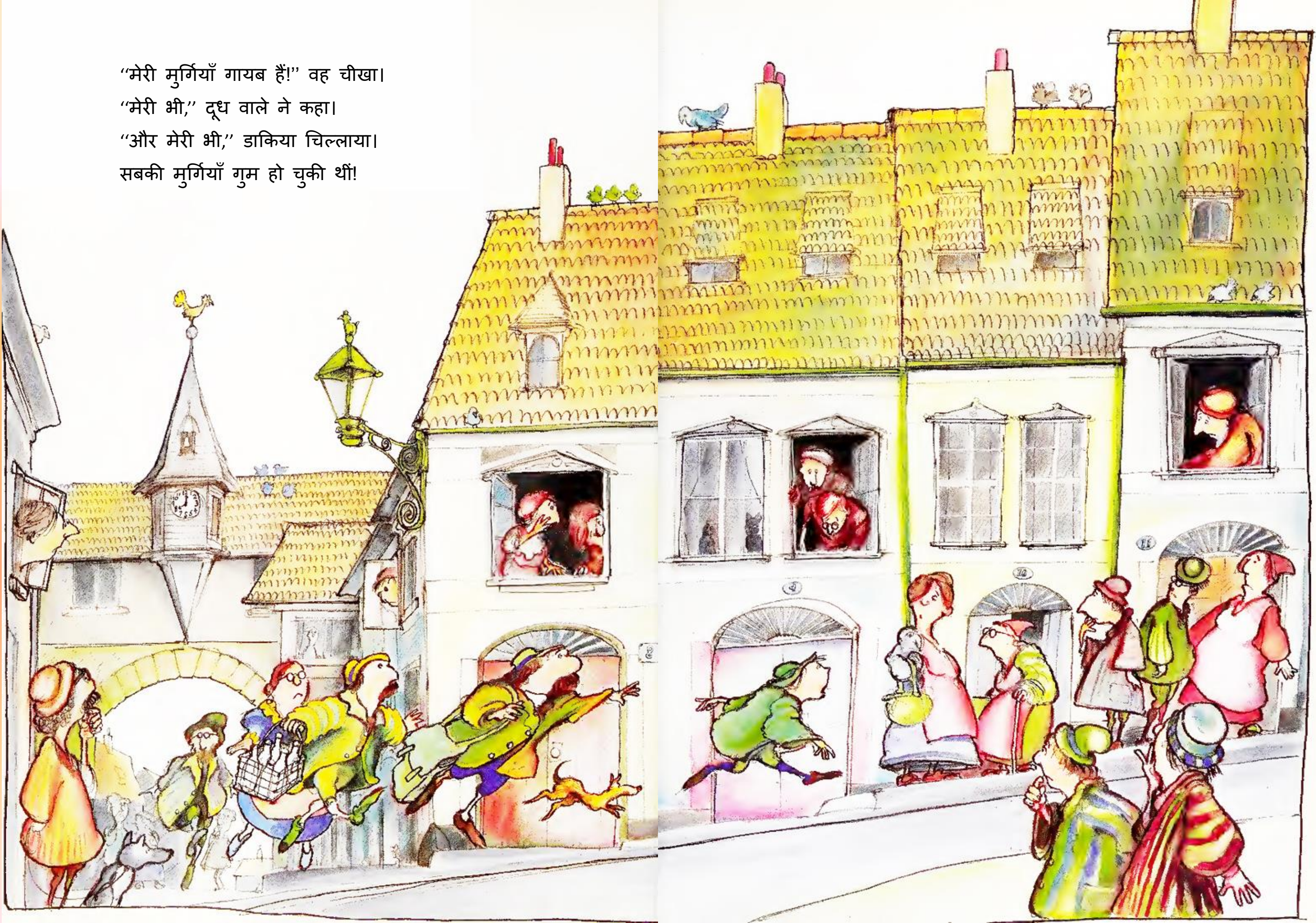
उस रात जब नगरवासी शान्ति से सो रहे थे राजा महल से एक खास सफ़र पर निकला ...



...और सूरज उगने के पहले लौट आया।



“मेरी मुर्गियाँ गायब हैं!” वह चीखा।
“मेरी भी,” दूध वाले ने कहा।
“और मेरी भी,” डाकिया चिल्लाया।
सबकी मुर्गियाँ गुम हो चुकी थीं!



“यह तो गज़ब हो गया!” सब लोग बिलखे।
“मुर्गियाँ नहीं का मतलब है अंडे नहीं।
और अंडे नहीं तो कल अंडा नृत्य भी नहीं!”
नगरवासियों के सामने अपनी मुर्गियाँ तलाशने के सिवा
और कोई चारा न था।
वे पूरे दिन नगर के कोने-कोने में मुर्गियों को ढूँढ़ते रहे,
पर कुछ परों के अलावा, मुर्गियों का नामो-निशान न मिला।
तब, जब सबने उम्मीद ही छोड़ दी ...



... ऑस्कर का मुर्गा बड़ी अकड़ से भरा चौराहे में घूमता नज़र आया।



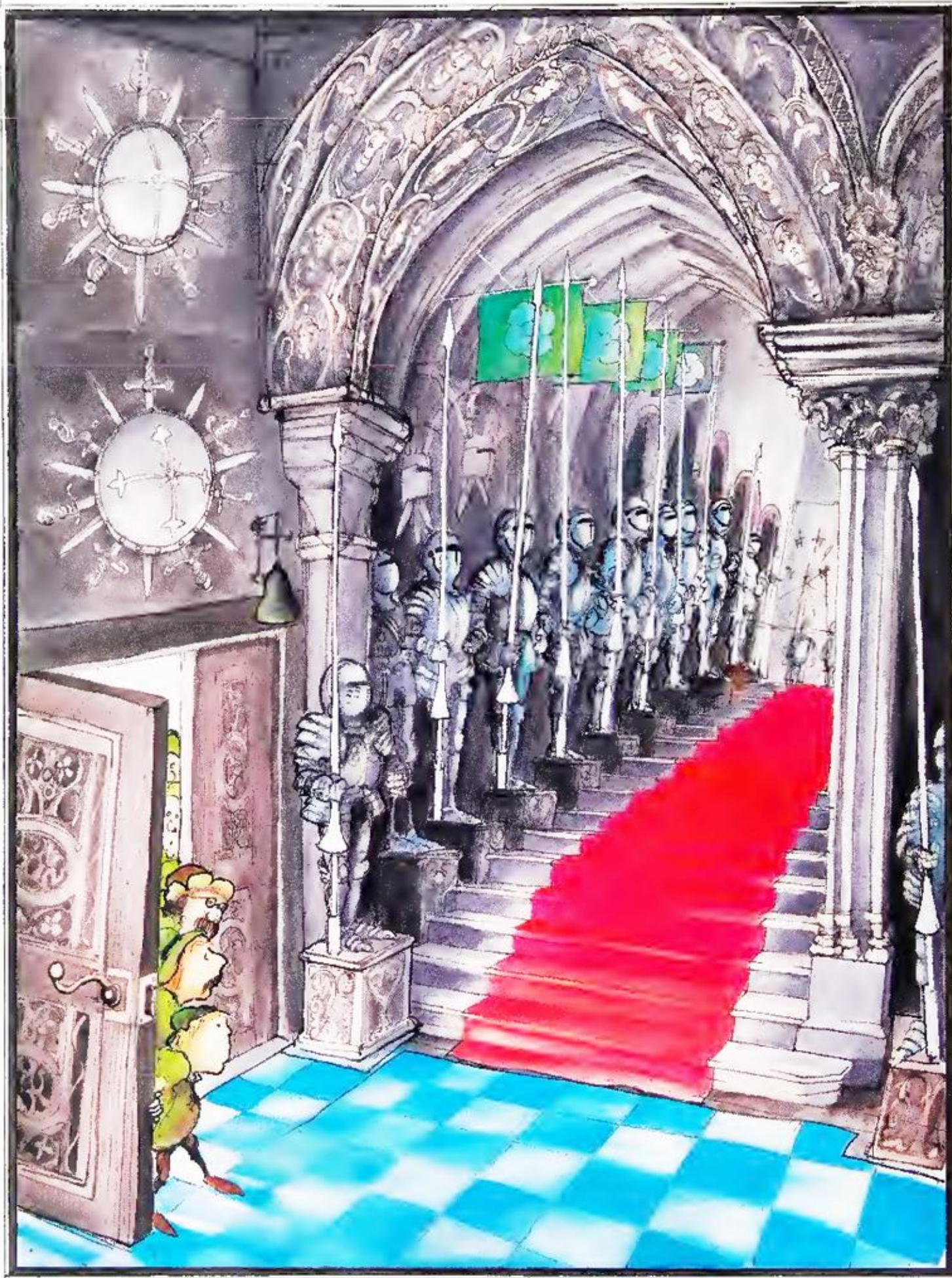
तब एक मुर्गी दिखी ...



जो महल की दीवार में बने एक छेद से बाहर कूदी।

“वे सब ज़रूर महल में होंगी!” ऑस्कर चिल्लाया।
सारे नगरवासी महल के सामने आ जुटे
और गुस्साते हुए महल के द्वार तक पहुँचे।
उन्होंने द्वार खटखटाया, घंटी बजाई,
पर पट बन्द के बन्द ही रहे।
कुछ घबराते हुए नगरवासियों ने
तय किया कि वे खुद ही अन्दर घुस जाएंगे।





अन्दर घुस वे धीमे-धीमे महल की
विशाल सीढ़ियाँ चढ़ने लगे,
अचानक कुछ बहुत ही बुरा घटा।

सीढ़ियों के किनारे लगे सारे
जिरह-बख्तर धड़धड़ा कर गिर पड़े ...



... जिससे भारी शोर मचा!





लोगों को चोट तो नहीं आई, पर सब लोग सहम गए।
इसके बावजूद उन्होंने महल की तलाश जारी रखी।

आखिरकार वे दो विशाल
दरवाज़ों तक पहुँचे।



ऑस्कर ने धक्का लगा
एक दरवाज़ा खोला।



और सबके सब यह देख भौंचक रह गए
कि वह विशाल सभाकक्ष भरा था ...



मुर्गियों से!

कक्ष के दूसरे छोर पर

एक कुर्सी के पीछे छिपा था राजा!

“मैंने साचा कि तुम लोग हमलावर सेना हो,”

राजा ने शालीन दिखने की कोशिश करते कहा।



“आपने हमारी मुर्गियाँ क्यों ले लीं?” ऑस्कर ने जानना चाहा।

“दरअसल मैं अंडा नृत्य में शामिल होना चाहता था,”

राजा ने शर्मिन्दगी के साथ कहा, उसके गाल लाल हो चले थे

“पर मैं आप लोगों से बुलावा मांग ही नहीं सका।”

“यह तो हद दर्जे की बेवकूफी है,” किसीने फुसफुसा कर कहा।

राजा के गाल शर्म से और लाल हो गए।

“हाँ, सो तो है,” राजा हकलाते हुए बोला। तब हिम्मत कर उसने एक घोषणा की, “अब से सालाना अंडा नृत्य महल में एक शानदार दावत के साथ खत्म होगा - जिसकी शुरुआत कल से होने वाली है।”

लेगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, वे चीख पड़े। और तब खूब हंसे जब ऑस्कर ने फर्श की ओर इशारा किया, जहाँ सभी मुर्गियाँ थीं।



और चारों ओर अंडे छितरे-बिखरे थे।

सो बिना समय ज़ाया किए जश्न
शुरू हो गया। और राजा का
सपना सच में बदल गया -
मय सारंगियों के!





लेखक व चित्रकार के बारे में

पिछले कई सालों से लैरी विल्क्स अपने श्रोताओं को कठपुतलियों, एनीमेशन और स्पेशल इफेक्ट्स वाली फिल्मों, अपने लेखन और चित्रों से मोहित करते रहे हैं। *द किंग्स एग डांस* लैरी की पहली सचित्र बाल पुस्तक है। लगता है अपनी खिलंदड कला के माध्यम से लैरी की कल्पना में बसी कठपुतलियाँ इस नवाचारी कथा में उतर आई हैं।

हालांकि लैरी का जन्म यॉर्कशायर, इंग्लैण्ड में हुआ, उनका लालन-पालन मलेशिया में हुआ। तेरह वर्ष की उम्र से उनका कलात्मक प्रशिक्षण शुरू हो गया था। बाद में उन्होंने डर्बी कॉलेज ऑफ आर्ट, इंग्लैण्ड में पढ़ाई की और अपना स्नातक अध्ययन शैफील्ड स्कूल ऑफ आर्ट से ऑनर्स के साथ पूरा किया।

बाल साहित्य में लैरी विल्क्स की रुचि तब जगी जब वे अपने दो बच्चों का लालन-पालन करने लगे। वे अब लिंकनशायर, इंग्लैण्ड में रहते हैं और अपनी कल्पना से कथाएं रचते-बुनते हैं।

